राजनैतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक चिंतन का साप्ताहिक समाचार पत्र

प्रज्ञा शनि नेशन्स टाइम्स

संस्करण: नई दिल्ली व पाली राज. 11 अगस्त 2011 - 17 अगस्त 2011, वर्ष : 8, अंक : 38,
साप्ताहिक, मूल्य : 2 रुपये, वार्षिक सदस्यता शुल्क: 250/-

shaninationstimes@ gmail.com

web : www.shanidham.in
www.facebook.com/ shreeshanidham

दाती संदेश

अहंकार की परत को उखाड़ फेंको यदि पहुंचना है असलियत तक

मित्रो, बाहरी दृष्टि से देखने पर दुनिया के समस्त प्राणी कुछ न कुछ ढूंढ़ते हुए दिखाई देते हैं। वे क्या ढूंढ रहे हैं, इसका पता उन प्राणियों को ही होता है। किंतु अन्य प्राणी उनकी खोज की कल्पना अपने स्वयं की स्थिति के आईने में ही करते

हैं। भूख से व्याकुल मनुष्य यही सोच सकता है कि सभी पशु-पक्षी भोजन की तलाश में ही इधर-उधर दौड़ रहे हैं। विषय-वासना के लिए व्याकुल व्यक्ति के लिए अन्य प्राणी विषय-वासनाओं के लिए ही इधर-उधर डोलते नजर आते हैं। धूप, शीत या वर्षा से बेहाल व्यक्ति अन्य पशु-पक्षियों को अपना सिर छुपाने के लिए कोई आश्रय स्थल की खोज में लगे दिखाई देते हैं ताकि वहां उन्हें इनसे त्राण मिल सके। किंतु संसार से विरक्त साधु-संत का नजरिया सबसे भिन्न होता है और वे सोचते हैं कि सभी लोग मूलतः परम आनंद के मूल स्रोत प्रभु की तलाश में ही लगे हैं। किंतु विषय-वासनाओं में ही परम आनंद पाने का भ्रम उन्हें गलत दिशा में मोड़ देता है। उन्हें अपने भ्रम का पता तब चलता है जब विषय-वासनाओं से मिलने वाले आनंद कुछ ही क्षणों में गायब हो जाते हैं।

सच्चे साधु-संत अपने समसामयिक लोगों को बार-बार समझाते हैं कि क्षणभंगुर सुखों के चक्कर में असलियत को मत भूलो। क्योंकि संसार का हर पदार्थ उस असलियत का ही प्रतिबिंब है। प्रतिबिंब को असलियत नहीं समझना ही तत्वबोध कहा जाता है। अहंकार के आवरण की बदौलत ही जीव परमानंद स्वरूप परमात्मा से अलग हुआ है और जबतक वह उस अहंकार से मुक्त नहीं हो लेता तबतक उसे असलियत का बोध नहीं हो सकता। मनुष्य के अंदर नैसर्गिक रूप से अहंकार का आवरण तोड़ डालने की शक्ति छिपी हुई है। सचमुच अद्भुत शक्ति है जीव में। लेकिन वह भूल चुका है कि उसके अंदर ही एक असीम

शेष पेज 14 पर

व्रत-त्यौहार

13 अगस्त से 19 अगस्त 2011 तक
(श्रावण पूर्णिमा से भाद्रपद कृष्ण पंचमी तक)

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र	चन्द्र राशि	विशेष
13	शनि	पूर्णिमा	श्रवण	मकर	रक्षा बंधन, श्रावणी उपाकर्म, गायत्री जयंती, दर्शन अमरनाथ गुफा दोपहर 12.07 बजे भद्रा समाप्त
14	रवि	प्रतिपदा	धनिष्ठा	कुंभ	प्रात: 6.52 बजे पंचक प्रारंभ
15	सोम	द्वितीया	शतभिषा	कुंभ	भारत स्वतंत्रता दिवस
16	मंगल	तृतीया	पू.भा.	मीन	कज्जली तीज, भद्रा सायं 4.04 बजे से आधी रात के बाद 05.02 बजे तक
17	बुध	चतुर्थी	उ.भा.	मीन	श्री गणेश संकष्ट (बहुला) चतुर्थी व्रत
18	गुरु	चतुर्थी	रेवती	मीन	गण्डमूल
19	शुक्र	पंचमी	रेवती	मेष	चंदन षष्ठी व्रत, हल षष्ठी, पंचक समाप्त प्रात: 5.59 बजे

मेरी आर्थिक स्थिति पहले से ही खराब चल रही है किंतु जुलाई से परेशानियां कुछ ज्यादा ही बढ़ गयी हैं। मेरी जन्मकुंडली देखकर कोई ऐसा उपाय बताएं जिससे मेरी परेशानियां दूर हो जायें, बड़ी कृपा होगी।

– सुदीप ओझा

आप का कन्या लग्न व मकर राशि है। इस समय आप को राहु की महादशा में शुक्र की अन्तर दशा है। गोचर की स्थिति अच्छी नहीं है जिससे आपकी परेशानियां काफी बढ़ गयी हैं। आप का समय सामान्य है ज्यादा अच्छा नही इसलिए ध्यान से काम करें। दूसरे लोगों से मदद नही मिलेगी।

समाधान – आप दुर्गा माता की पूजा करें व दुर्गासप्तशती का पाठ कराएँ।

राहु मंत्र का जाप करें –

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सह राहुवे नमः।

शुक्र मंत्र का जाप करें –

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सह शुक्राय नमः।

शनि मंत्र का जाप करें –

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।

इन मंत्रों की कम से कम तीन मालाएँ रोज जाप करें।

शिव मंदिर में प्रतिदिन शिवलिंग पर जल चढ़ाएं और पूजा करें।

आप अपनी समस्याएं हमें सादे कागज पर निम्न जानकारी के साथ लिख कर भेज सकते हैं।

नाम: ....

पता : ....

दूरभाष : ....

जन्म तिथि : ....

जन्म समय : ....

जन्म स्थान : ....

आपका प्रश्न : ....

....

एक पत्र में केवल एक प्रश्न ही लिखें। प्राप्त समस्याओं के उत्तर हम आगामी अंकों में प्रकाशित करेंगे। प्रश्न के साथ एक 5 रु. का टिकट लिखा जवाबी लिफाफा अवश्य भेजें।

भेजने का पता :

अंतरराष्ट्रीय वैदिक ज्योतिष विकास व अनुसंधान संस्थान

श्री शनि तीर्थ क्षेत्र, श्री शनिधाम, असोला,

फतेहपुर बेरी, महरौली, नई दिल्ली-30

फोन : 26653600, 26654400

फैक्स / फोन : 26653500

E-Mail: shanidham@gmail.com

इस पृष्ठ की सभी सामग्री अंतरराष्ट्रीय वैदिक ज्योतिष विकास व अनुसंधान संस्थान।

वास्तु शास्त्र : परिचय व महत्व

क्रमागत

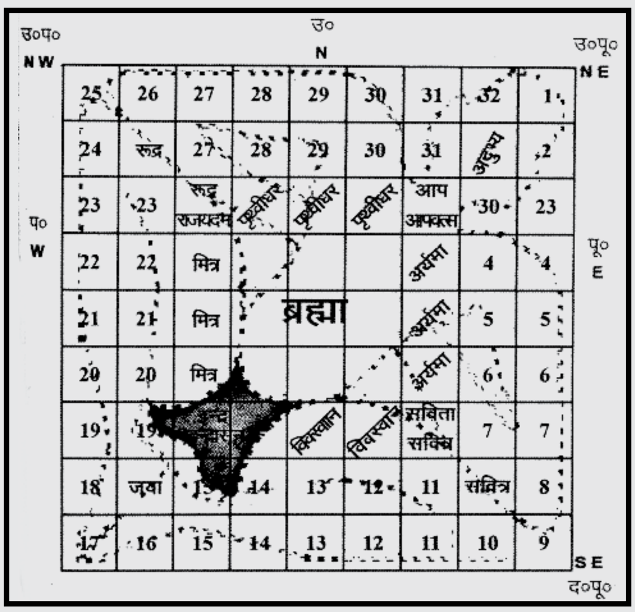

भवन निर्माण जीवन को व्यवस्थित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इसलिए उत्तम आवास सुख-समृद्धि का प्रतीक माना जाता है। वास्तुविद् अपनी योग्यता और निर्माण कौशल से भवन को ऐसे रूप में बनाता है ताकि उसमें निवास करने वाले गृह स्वामी सुख-शांति एवं आनंद के साथ अपना जीवन यापन कर सकें।

2. क्षत्रिया भूमि

क्षत्रिया भूमि की मिट्टी का रंग लाल होता है, स्वाद कषैला होता है। यह रक्तगन्ध से युक्त होती है। यह राज्यप्रदा एवं स्पर्श करने पर कठोर मालूम पड़ती है। ऐसी भूमि पर शासकीय कार्यालय एवं सै. निकों के लिए भवन–निर्माण करना उपयुक्त होता है। यह भूमि पराक्रम की शक्ति स्वतः प्रदान करती है। यह भूमि सभा भवन, शस्त्रागार, कारखाना छावनी एवं सैनिक–बस्ती के निर्माणार्थ उपयुक्त होती है।

3. वैश्या भूमि

वैश्या भूमि की मिट्टी का रंग हरा या पीला, स्वाद खट्टा एवं गन्ध शहद जैसा होता है। यह व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों के लिए उपयुक्त होती है। ऐसी भूमि पर बंगला या कोठी, धनिकों के भवन, दुकानें या वाणिज्यक प्रतिष्ठान बनाना लाभकर होता है। यह भूमि धन देने में सक्षम होती है।

4. शूद्रा भूमि

शूद्रा भूमि का रंग काला, स्वाद कड़वा एवं गन्ध मदिरा के समान होती है। यह भूमि त्याज्य होती है। स्पर्श करने में कठोरता की अनुभूति होती है। इसका उपयोग केवल श्रमिक–बस्ती, कुष्ठ आश्रम एवं श्मशान के लिए किया जा सकता है। विशेष जानकारी के लिए कृपया 'शुभाशुभ भूमि लक्षण चक्रम् देखें।

भवन ओर वृक्ष का सम्बन्ध

किसी भी भवन का निर्माण करने से पहले निर्माणाधीन भूमि पर वृक्ष, पौधे, लता, झाड़ियां, घांस, काँटेदार वृक्ष आदि हों, तो उसका प्रभाव क्या होगा इसका विचार भूमि–चयन करते समय अवश्य करना चाहिए।

नीचे दिये गए तत्वों को ध्यान से पढ़ें।

1. *ऐसी भूमि, जिस पर आम, आँवला–अमरूद, अनार, पलास, पपीता आदि के पेड़ उगे हों, वह भूमि श्रेष्ठ होती है।*
2. *ऐसी भूमि जिस पर उगे हुए वृक्षों पर फल–फू खूब आएं, लताएं और वनस्पतियां आसानी से बढ़ें, वह भीमि उत्तम प्रकार की होती है।*

क्रमशः

काल सर्प योग : कारण व निवारण के उपाय

क्रमागत

यदि जातक के निज पूर्वकृत कर्मों के फलस्वरूप जन्मकुंडली के नौवे भाव में राहु हो तो जातक डाक्टर भी हो तो पागलों का होगा। वह अपनी मेहनत से ही कुछ पाएगा। वैसे वह मान–प्रतिष्ठा को चोट पहुंचाता है और धर्म–कर्म से हीन रहता है। यदि वह परिवार से अलग रहता है तो पूरी तरह निकम्मा बन जाता है। शनि को अनुकूल करने वाले कार्य उसे अच्छा फल देते हैं। ई .एन.टी. की काम में आने वाली चीजों का यदि ये व्यापार करें तो लाभ मिलता है।

उपाय

1. प्रतिदिन माथे पर केसर का तिलक लगायें।
2. सिर पर चोटी संबंध रखें।
3. शुद्ध सोना पहनना शुभ रहता है।
4. परिवार का मुखिया शुभ रहता है।
5. घर में काला कुत्ता पालें।
6. ससुराल से संबंध अच्छे रखें।

दसवें भाव में राहु का फल व उपाय

करे दोस्ती जब तू हाथी या राजा।
बड़ा रखना दरवाजा अच्छा ही होगा।

लाल किताब के अनुसार दसवें भाव में बैठा राहु 'सांप की मणि' होता है। आम तौर पर दसवें भाव में बैठे राहु को शुभ कहा गया है और यदि यह ग्रह यहां पूरी तरह शुभ हो तो जातक बहुत अमीर होता है। उसके पास रुपये-पैसे और उच्च पद-प्रतिष्ठा होती है। यदि कुंडली में शनि भी शुभ होकर बैठा हो तो वह निस्संदेह बहुत ही बलवान होता है।

यदि जातक के निज पूर्वकृत कर्मों के फलस्वरूप जन्म-कुंडली के दसवें भाव में राहु शुभ हो तो जातक एक सफल व्यवसायी व लम्बी आयु का उपभोग करने वाला होता है। लेकिन यदि यहां बैठा राहु अपने शत्रु ग्रहों से अशुभ हो रहा हो तो जातक का अपना स्वास्थ्य व उसकी माता का स्वास्थ्य दोनों खराब हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में वह आर्थिक तौर पर भी कमजोर रहता है और उस समय उसके अनेक शत्रु भी हो सकते हैं।

राहु दसवें भाव में हो और मंगल कुंडली में अशुभ हो तो ऐसा जातक धन से हीन और जीवन में अनेक कठिनाइयां झेलने वाला होता है। यदि शनि की स्थिति प्रतिकूल हो तो जातक की उम्र तथा उसकी आंखों पर इसका बुरा प्रभाव पड़ता है। यदि राहु दसवें भाव में हो और चन्द्रमा चौथे हो तो जातक की मानसिक हालत खराब हो सकती है। वह आर्थिक तौर पर भी तंगहाली में गुजर-बसर करना पड़ता है। ऐसे जातक की हथेली पर शनि के पर्वत यानी मध्यमा उंगली की जड़ में राहु का निशान दृष्टिगोचर होता है जैसा कि चित्र में दर्शाया गया है।

क्रमशः

मानव शरीर की विशिष्ट संरचना

प्राणायाम द्वारा रोगों के उपचार की विधि भी हमारे देश में सदियों से आजमाई जाती रही है। यदि आप प्राणायाम द्वारा रोगों के उपचार का लाभ लेना चाहते हैं तो उसके लिए आपको किसी कुशल मार्गदर्शक की देखरेख में उसकी विधि सीखनी होगी और यह भी जानना होगा कि किस प्रकार के रोगों का शमन करने के लिए किस प्रकार के प्राणयाम का अभ्यास कितनी अवधि तक किया जाता है।

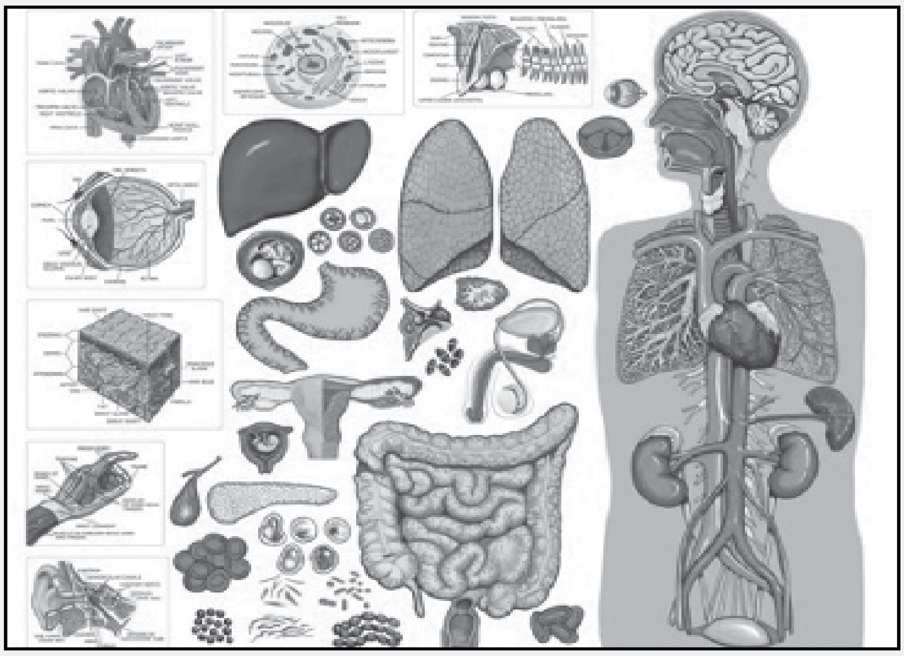

क्रमागत

प्राणायाम का रोगोपचार में उपयोग

हमारे प्राणों के अंदर जो स्पंदन है, वह चेतना का जीवंत स्पंदन है। वह कोई जड़-स्पंदन नहीं। वह अखिल ब्रह्मांड में व्याप्त परम-चेतना के स्पंदन से जुड़ा हुआ है जिससे इसे चराचर विश्व के एक-एक अणु-परमाणु का उद्भव और संश्लेषण-विश्लेषण निरंतर होता रहता है। अत: प्राणायाम द्वारा किये जाने वाले प्राण चिकित्सा के आगे रसायन या औषधि चिकित्सा का कद काफी छोटा है, साथ ही वे स्थूल उपाय हैं, सूक्ष्म उपाय नहीं।

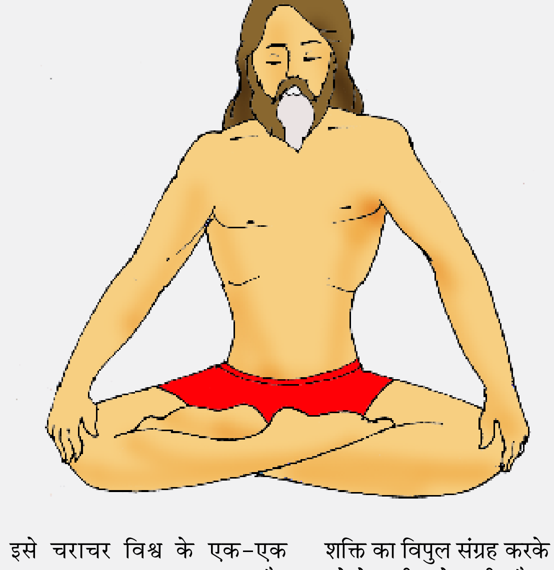

प्राणायाम के सूक्ष्म चिकित्सा पद्धति द्वारा बड़ी सरलता से प्राणों को सबल बनाया जा सकता है। प्राण-शक्ति का विपुल संग्रह करके मनुष्य को तेजस्वी, ओजस्वी और यशस्वी बनाया जा सकता है। प्राणायाम द्वारा रोगों की चिकित्सा एक मौलिक उपचार है। प्राणायाम और प्राण में सजातीय संबंध हैं। अत: भावना भरित प्राणायाम ही सजातीय कर्षण नियम के अनुसार प्राण-शक्ति प्रवर्धन का सरल एवं नैसर्गिक उपाय है।

प्राणायाम की विधि-व्यवस्था प्राणों के आकर्षण व कुदरती बहाव को स्वाभाविक बनाये रखती है, जिससे प्राण-ऊर्जा का आदान-प्रदान करने वाले आंतरिक अंग स्वस्थ बने रहते हैं और वे अपना कार्य निरंतर सुचारु रूप से करते रहते हैं। अत: प्राणायाम आरोग्यता और बल वृद्धि का एक सर्व सुलभ साधन तो है ही, रोग निवारण और स्वास्थ्य लाभ का अचूक उपाय भी है। इसका प्रभाव भी स्थायी होता है तथा कोई ऐसा दुष्प्रभाव भी नहीं होता जो औषधि से किये जाने वाले उपचारों में अक्सर हो जाया करता है।

शरीर के किसी अंग विशेष की ओर प्राणायाम की ऊर्जा से पुष्ट रक्त का संचार करने के लिये पहले सीधे बैठ जाइये। यदि बैठना संभव न हो तो पीठ के बल सीधा लेटने में भी कोई हानि नहीं है। अब सबसे पहले पांच से दस बार तक इस प्रकार श्वास लेने व छोड़ने की क्रिया संपादित करें कि श्वास निकालने में जितना समय लगे उतना ही समय श्वास को बाहर निकालने में लगाया जाये जबकि स्वांस को उसके आधे समय तक अंदर रोकने में लगाया जाये।

क्रमशः

साप्ताहिक राशिफल

18 अगस्त - 24 अगस्त तक

मेष (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)

18, 19 को समय मध्यम होगा। हालात व परिस्थिति में सुधार होगा। बौद्धिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। 20, 21 को समय मध्यम होगा। आय व व्यय समान होगा। अध्यात्म के तरफ झुकाव होगा। 22, 23 को ग्रह-गोचर की स्थिति शुभ व अनुकूल होगी। धर्म-कर्म में रुचि बढ़ेगी। 24 को समय शुभ व अनुकूल होगा। नये मित्रों का लाभ होगा।

वृष (ई, ऊ, ए, ओ, वा, वी, वु, वे, वो)

18, 19 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। धन हानि व परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।20, 21 को समय प्रतिकूल होगा। वाद-विवाद की स्थिति उत्पन्न होगी। संयम से काम लें। 22, 23 को धीरे-धीरे परिस्थिति व हालात में सुधार होगा। पारिवारिक व सामाजिक कार्यों को करने का अवसर प्राप्त होगा। 24 को समय शुभ होगा।

मिथुन (का, कि, कू, घ, ङ, छ, के, को, ह)

18, 19 को समय शुभ है। साझेदारी के कार्य में विशेष लाभ होगा। 20, 21 को ग्रह-गोचर की स्थिति अनुकूल होगी। परिस्थिति में सुधार हा. `गा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। 22, 23 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। शत्रु मार्ग में रोड़े अटकाने का प्रयास करेंगे। 24 को समय व परिस्थिति में सुधार होगा।

कर्क (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

18, 19 को विद्या अध्ययन आदि में रुचि बढ़ेगी। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। 20, 21 को ग्रह-गोचर की स्थिति शुभ होगी। पुराने ऋण-रोग आदि से छुटकारा मिलेगा। शुभ कार्यों की योजना सफल होगी। 22, 23 को समय शुभ होगा। वैवाहिक सुख में वृद्धि होगी। पत्नी व बच्चों का सुख सहयोग बढ़ेगा। 24 को मन में प्रसन्नता होगी।

सिंह (मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)

18, 19 को समय मध्यम होगा। मानसिक तनाव से राहत महसूस करेंगे।20, 21 को समय मध्यम होगा। कार्य आदि में रुचि कम होगी परंतु विद्या अध्ययन आदि के अवसर प्राप्त होंगे। 22, 23 को ग्रह-गोचर की स्थिति शुभ व अनुकूल होगी। पराक्रम के क्षेत्र में विजयी होंगे। साहस व उत्साह बढ़ेगा। 24 को समय शुभ व अनुकूल होगा। जीवन साथी का सहयोग मिलेगा।

कन्या (टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)

18, 19 को समय प्र. तिकूल होगा। भाग्य साथ नहीं देगा। 20, 21 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। बनते हुए कार्य में बाधा व उलझनें महसूस करेंगे। धन की हानि होगी। 22, 23 को समय मध्यम है। आय साधन मध्यम ही होगा। 24 को ग्रह-गोचर की स्थिति शुभ होगी।

तुला (रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तु, ते)

18, 19 को ग्रह-गोचर की स्थिति शुभ फलप्रद होगी। सोची-विचारी गयी योजना सफल होगी। 20, 21 को ग्रह-गोचर की स्थिति शुभ व अनुकूल होगी। नये व्यवसायिक अनुबंध लाभप्रद साबित होंगे। 22, 23 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। परिवार में किसी का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। 24 को समय मध्यम है।

वृश्चिक (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

18, 19 को समय मध्यम होगा परंतु वाणी की कुशलता से कार्य सम्पन्न करेंगे। 20, 21 को ग्रह-गोचर की स्थिति शुभ व अनुकूल होगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा कार्य-व्यवस्था आदि में सुधार होगा। 22, 23 को ग्रह-गोचर की स्थिति शुभ होगी। साहस व पराक्रम तेज होगा। भाई-बन्धु का सहयोग होगा। 24 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी।

धनु (ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे)

18, 19 को समय शुभ व अनुकूल होगा। भाग्य साथ देगा। उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे।20, 21 को ग्रह-गोचर शुभ होगा। सूझ-बूझ व परिश्रम से बिगड़े हुए कार्य संवर सकते हैं। 22, 23 को समय मध्यम होगा। धैर्य से कार्य करें। आशानुकूल सफलता मिलना संभव नहीं होगा। 24 को ग्रह-गोचर की स्थिति शुभ होगा।

मकर (भो, जा, जी, जो, खी, खू, खे, खो, गा, गी)

18, 19 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। मान-सम्मान को ठेस लगना संभव होगा। 20, 21 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। प्रतिद्वन्दी व विरोधी हानि का प्रयास करेंगे। 22, 23 को ग्रह-गोचर की स्थिति शुभ व अनुकूल होगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा कार्य-व्यवस्था आदि में सुधार होगा। 24 को समय मध्यम होगा। वाणी की मधुरता को बनाये रखें।

कुम्भ (गु, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा)

18, 19 को समय शुभ है, भाग्योदय होगा। भाई-बन्धु के सहयोग से कार्य सम्पन्न कर पायेंगे। 20, 21 को समय शुभ व अनुकूल होगा। हर कार्य में सफलता। मान-सम्मान की प्राप्ति होगी। 22, 23 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। मित्रों के साथ मनोरंजन आदि में समय व्यतीत करेंगे। 24 को ग्रह-गोचर की स्थिति अनुकूल व लाभप्रद साबित होगी।

मीन (दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची)

18, 19 को ग्रह-गोचर की स्थिति शुभ होगी। जमीन-जायदाद संबंधी मसलें सुलझ जायेंगे। 20, 21 को समय शुभ होगा। अपनों से सुख-सहयोग की आशा कर सकते है। नई मित्रता लाभप्रद साबित होगी। 22, 23 को समय शुभ व अनुकूल होगा। विद्या अध्ययन आदि में सफलता प्राप्त करेंगे। 24 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी।

चाना छठ व्रत से मिलता है सुयोग्य पति

इस व्रत से पितरों का आशीर्वाद मिलता है जिससे होती है सुख-समृद्धि और मनोवांछित पति की प्राप्ति।

यह व्रत भाद्रपद की कृष्ण पक्ष की षष्ठी को मनाया जाता है। यह व्रत केवल कुंवारी कन्याओं को करना चाहिये। इस दिन व्रत रखने वाली कुंवारियां निराहार रह कर पूजन करती हैं। एक पट्टे पर जल से भरे लोटे पर रोली से एक स्वास्तिक बनायें और लोटे की किनारी पर रोली से सात बिन्दी लगायें।

एक गिलास गेहूं से भरकर उस पर दक्षिणा रखें। फिर हाथ में सात-सात दाने गेहूं के लेकर कहानी सुनें। कहानी सुनने के पश्चात लोटे में भरे जल से चंद्रमा को अर्घ्य दें और गेहूं और दक्षिणा को ब्राह्मणी को दे दें। जिस समय कहानी सुनते हैं उस समय एक कलश जल का भर कर रख लेते हैं और बाद में उसी जल से भोजन तैयार करें।

चंद्रमा को अर्घ्य देकर भोजन करें।

व्रत कथा – एक नगर में एक साहूकार व उसकी पत्नी रहते थे। वे अपना कोई भी कार्य स्वयं न करके नौकरों से करवाते थे। साहूकार की पत्नी बर्तनों को सूंघ-सूंघ कर देखती थी कि बर्तन गंदा तो नहीं है। कुछ समय पश्चात उन्हें एक पुत्र की प्राप्ति हुई। उसकी उन्होंने बड़े होने पर शादी कर दी।

विवाह के कुछ समय उपरान्त साहूकार व उसकी पत्नी की मृत्यु हो गयी। मृत्यु के बाद पुत्र मोह-वश साहूकार तो बैल बना और साहूकारिनी कुतिया। वे दोनों अपने बेटे के घर ही पहुंच गये। साहूकार का बेटा बैल से खूब काम करवाता, दिन भर खेत जुतवाना और कुंए से पानी खिंचवाता। कुतिया उसके घर की रखवाली करती थी। एक वर्ष के पश्चात उसके पिता का श्राद्ध आया। श्राद्ध के दिन खूब पकवान बनाये गये और खीर भी बनायी गयी। खीर को ठण्डा करने के लिए बहू ने उसे थाली में रख दिया। उसी समय एक चील उड़ती हुई आई। उसके मुख में मरा हुआ सर्प था। वह सर्प चील के मुंह से छूट कर खीर में गिर गया। यह सब कुतिया बैठी हुई देख रही थी, परन्तु उसकी बहू को कुछ पता नहीं था।

कुतिया सोचने लगी, यदि खीर किसी ने खाया तो तुरन्त ही मर जायेगा, अत: अब क्या करना चाहिये? कुतिया अभी सोचने लगी ही थी कि भीतर से उसकी बहू खीर उठाने आई। कुतिया ने खीर में मुंह दे दिया। जब लड़के की बहू ने कुतिया को खीर में मुंह देते हुए देखा तो वह उसके पीछे डण्डा लेकर भागी। जब बहू ने कुतिया की पीठ पर डण्डा मारा तो उसकी पीठ की हड्डी टूट गयी। रात्रि में कुतिया बैल के पास आयी और

शेष पेज 14 पर

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर विशेष

महापर्व श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

व्रत पूर्वक धूमधाम से मनाएं और जीवन सार्थक करें

भगवान श्रीकृष्ण के रूप में अवतरित हो परम पिता परमात्मा ने हर प्रकार के भक्तों और साधकों की अभिलाषाएं पूर्ण की। उस लीला शरीर में वे षोडश कलाओं से अभिव्यक्त हो ग्वाल बालों सहित वीर योद्धा अर्जुन को भी कर्तव्य पथ का दिग्दर्शन कराया। महर्षि व्यास जैसे मनीषी भी उनके दर्शन से कृतकृत्य हुए। पूरी दुनिया में उनके अवतरण दिवस को धूम-धाम से मनाया जाता है और भक्तगण शास्त्रोक्त विधि से व्रत भी रखते हैं। इस व्रत के अवसर पर प्रस्तुत है भविष्य पुराण से उद्धृत वह प्रसंग जिसमें व्रत कथा एवं विधि का वर्णन है। एक बार भगवान श्री कृष्ण से राजा युधिष्ठिर ने पूछा– अच्युत! आप विस्तार से (अपने जन्म दिन) जन्माष्टमी व्रत का विधान बतलाने की कृपा करें।

भगवान श्री कृष्ण बोले – राजन्! जब मथुरा में कंस मारा गया, उस समय माता देवकी मुझे अपनी गोद में लेकर रोने लगीं। पिता वासुदेव जी भी मुझे तथा बलदेव जी को आलिङ्गित कर गद्गद वाणी से कहने लगे– आज मेरा जन्म सफल हुआ, जो मैं अपने दोनों पुत्रों को कुशल से देख रहा हूँ। सौभाग्य से आज हम सभी एकत्र मिल रहे हैं। हमारे माता-पिता को अति हर्षित देख कर बहुत से लोग वहाँ एकत्र हुए और मुझसे कहने लगे – भगवन! आपने बहुत बड़ा काम किया, जो इस दुष्ट कंस को मारा। हम सभी इससे बहुत पीड़ित थे। आप कृपा कर यह बतलायें कि आप माता देवकी के गर्भ से कब आविर्भूत हुए थे। हम सब उस दिन महोत्सव मनाया करेंगे। आपको बार-बार नमस्कार है, हम सब आपकी शरण हैं। आप हम सभी पर प्रसन्न होइये। उस समय पिता वसुदेव जी ने मुझसे कहा था कि अपना जन्म दिन इन्हें बता दो।

तब मैंने मथुरा निवासी जनों को जन्माष्टमी व्रत का रहस्य बतलाया और कहा– पुरवासियो! आप लोग मेरे जन्म दिन को विश्व में जन्माष्टमी के नाम से प्रसारित करें। प्रत्येक धार्मिक व्यक्ति को जन्माष्टमी का व्रत अवश्य करना चाहिये। जिस समय सिंह राशि पर सूर्य और वृष राशि पर चन्द्रमा था, उस भाद्रपद मास की कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को अर्धरात्रि में रोहिणी नक्षत्र में मेरा जन्म हुआ। वसुदेव जी के द्वारा माता देवकी के गर्भ से मैंने जन्म लिया। यह दिन संसार में जन्माष्टमी नाम से विख्यात होगा। प्रथम यह व्रत मथुरा में प्रसिद्ध हुआ और बाद में सभी लोकों में इसकी प्रसिद्धि हो गयी। इस व्रत के करने से संसार में शान्ति होगी, सुख प्राप्त होगा और प्राणि वर्ग रोग रहित होगा।

महाराज युधिष्ठिर ने कहा – भगवन! अब आप इस व्रत का विधान बतलायें, जिसके करने से आप प्रसन्न होते हैं।

क्रमशः

भाद्रपद मास की अजा एकादशी का माहात्म्य

हमारे प्राचीन धर्म ग्रंथों में प्रत्येक मास के एकादशी व्रतों को अति महत्वपूर्ण और मनोरथ सिद्ध करने वाला बताया गया है। पद्म पुराण में भाद्रपद मास की अजा व पद्म एकादशियों को विपत्तियों के नाश के लिये बहुत उपयोगी बताया है। इसकी महिमा व व्रत विधि पर प्रकाश डालने वाले प्रसंग को प्रस्तुत किया जा रहा है।

एक बार भगवान श्री कृष्ण से महाराज युधिष्ठिर ने पूछा – जनार्दन! अब मैं यह सुनना चाहता हूँ कि भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष में कौन सी एकादशी होती है? कृपया बताइये।

भगवान श्री कृष्ण बोले– राजन्! एकचित होकर सुनो। भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम 'अजा' है, वह सब पापों का नाश करने वाली बतायी गयी है। जो भगवान हृषीकेश का पूजन करके इसका व्रत करता है, उसके सारे पाप नष्ट हो जाते हैं। पूर्वकाल में हरिश्चन्द्र नामक एक विख्यात चक्रवर्ती राजा हो गये हैं, जो समस्त भूमण्डल के स्वामी और सत्यप्रतिज्ञ थे। एक समय किसी कर्म का फलभोग प्राप्त होने पर उन्हें राज्य से भ्रष्ट होना पड़ा। राजा ने अपनी पत्नी और पुत्र को बेचा। फिर अपने को भी बेच दिया। पुण्यात्मा होते हुए भी उन्हें चाण्डाल की दासता करनी पड़ी। वे मुर्दों का कफन लिया करते थे। इतने पर भी नृपश्रेष्ठ हरिश्चन्द्र सत्य से विचलित नहीं हुए। इस प्रकार चाण्डाल की दासता करते हुए उनके अनेक वर्ष व्यतीत हो गये। इससे राजा को बड़ी चिन्ता हुई। वे अत्यन्त दुःखी होकर सोचने लगे – 'क्या करूँ? कहाँ जाऊँ? कैसे मेरा उद्धार होगा?' इस प्रकार चिन्ता करते-करते वे शोक के समुद्र में डूब गये। राजा को आतुर जान कर कोई मुनि उनके पास आये, वे महर्षि गौतम थे। श्रेष्ठ ब्राह्मण को आया देख नृपश्रेष्ठ ने उनके चरणों में प्रणाम किया और दोनों हाथ जोड़ गौतम के सामने खड़े होकर अपना सारा दुःखमय समाचार कह सुनाया। राजा की बात सुन कर गौतम ने कहा– 'राजन्! भादों के कृष्ण पक्ष में अत्यन्त कल्याणमयी 'अजा' नाम की एकादशी आ रही है, जो पुण्य प्रदान करने वाली है। इसका व्रत करो। इससे पाप का अन्त होगा। तुम्हारे भाग्य से आज के सातवें दिन एकादशी है। उस दिन उपवास करके रात में जागरण करना।'

ऐसा कह कर महर्षि गौतम अन्तर्धान हो गये। मुनि की बात सुन कर राजा हरिश्चन्द्र ने उस उत्तम व्रत का अनुष्ठान किया। उस व्रत के प्रभाव से राजा सारे दुःखों से पार हो गये। उन्हें पत्नी का सन्निध्य और पुत्र का जीवन मिल गया। आकाश में दुन्दुभियाँ बज उठीं। देव लोक से फूलों की वर्षा होने लगी। एकादशी के प्रभाव से राजा ने अकण्टक राज्य प्राप्त किया और अन्त में वे पुरजन तथा परिजनों के साथ स्वर्ग लोक को प्राप्त हो गये। राजा युधिष्ठिर! जो मनुष्य ऐसा व्रत करते हैं, वे सब पापों से मुक्त हो स्वर्ग लोक में जाते हैं। इसके पढ़ने और सुनने से अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है।

गायत्री जयंती पर विशेष

गायत्री-महिमा व पूजा-विधि

क्रमागत

'यं' इस वायु स्वरूपिणी देवी को धूप समर्पण करता हूँ, उन्हें बार-बार नमस्कार है। 'रं' इस अग्निस्वरूपिणी देवी को दीपक प्रदान करता हूँ, उन्हें बार-बार नमस्कार है। 'वं' इस अमृत स्वरूपिणी देवी को नैवेद्य अर्पण करता हूँ, उन्हें बार-बार नमस्कार है। यं, रं, लं, वं, हं – इनका उच्चारण करके पुष्पांजलि अर्पण करनी चाहिये। इस प्रकार मानसिक पूजा करने के उपरांत मुद्रा प्रदर्शित करे। फिर मन से देवी का ध्यान करते हुए मुख से मंत्रों का धीरे-धीरे उच्चारण करें। सिर और ग्रीवा को कँपाना निषिद्ध है। दाँत न दिखाये – अर्थात् ठठाकर हँसे नहीं। विधि के साथ एक सौ आठ, अट्ठाईस अथवा अशक्त हो तो दस बार ही गायत्री का जप करे। इससे कम किसी भी स्थिति में नहीं जपना चाहिये। इसके बाद 'उत्तम' इत्यादि अनुवाक् का मंत्र पढ़कर देवी का विसर्जन किया जाता है।

विद्वान को जल में खड़े होकर कभी भी गायत्री का जप नहीं करना चाहिये, क्योंकि कुछ महर्षियों का यह कथन है कि यह अग्निमुखी कहलाती है। जप के बाद सुरभि, ज्ञान, शूर्प, कूर्म, योनि, पंकज, लिंग और निर्वाण- ये आठ मुद्राएँ प्रदर्शित करे। तदनन्तर इस प्रकार क्षमा-प्रार्थना करे- 'कश्यप के प्रति प्रिय भाषण करने वाली देवी! मेरे उच्चारण करने में जो अक्षर, पद, स्वर और व्यंजन की त्रुटि हो गयी हो, वह सब आप क्षमा करने की कृपा करें।' महामुने! तदनन्तर गायत्री-तर्पण करने का नियम है। इसका गायत्री छन्द है, विश्वामित्र ऋषि कहे गये हैं, सविता देवता हैं। तर्पण करने के लिये इसका विनियोग किया जाता है।

(तर्पण का यह नियम है-) 'भूः' से ऋग्वेद पुरुष का, 'भुवः' से यदुर्वेद का, 'स्वर्' से सामवेद का, 'महः' से अथर्ववेद का, 'जनः' से इतिहास-पुराण का 'तपः' से सम्पूर्ण आगम शास्त्रों का, 'सत्यं' से सत्यलोक-संज्ञक पुरुष का और 'ॐ भूः' से एकपदा नाम वाली गायत्री का, 'भुवः' से दो पद वाली गायत्री का, 'स्वः' से तीन पद वाली गायत्री का तथा 'ॐ भूर्भुवः' से चतुष्पदा गायत्री का मैं तर्पण करता हूँ- यों कहना चाहिये। इसके बाद उषसी, गायत्री, सावित्री,

शेष पेज 15 पर

दिमागी कमजोरी में बहुत लाभदायक है सेब

सेब दुनिया भर में व्यापक रूप से उगाया जाने वाला फल है। रोसासी परिवार के इस सदस्य को वैज्ञानिक भाषा में मालुस पूमिला लिनिअस कहते हैं। इसके पेड़ की ऊंचाई लगभग 15 मीटर होती है। कच्ची अवस्था में सेब हरे तथा स्वाद में खट्टे होते हैं पकने पर लाल-हरित आभा लिए मीठे और रसदार हो जाते हैं।

आयुर्वेद के अनुसार सेब पित्तनाशक, वातनाशक, शीतल, भारी, पुष्टिकारक हृदय के लिए फायदेमंद, वीर्यवर्धक तथा मसाने एवं गुर्दों को साफ करने वाला है। इससे अनेक आयुर्वेदिक दवाइयां बनती हैं। इसमें सर्वाधिक मात्रा में फास्फोरस होता है। इसके अतिरिक्त इसमें आयरन, प्रोटीन, कैल्शियम, शर्करा तथा बी समूह के विटामिन भी पर्याप्त मात्रा में होते हैं। कार्बोहाइट्रेट का एक रूप पेक्टीन भी इसमें खूब पाया जाता है। यह हृदय रोग में बहुत लाभकारी होता है। पथरी रोगी के लिए सेब बहुत फायदेमंद होता है। रोगी को पूर्णतया पके हुए चार-पांच सेब प्रतिदिन खाने को देने चाहिए। भोजन में शाक-सब्जी व फल देने चाहिए। जिगर के रोगी के लिए तो सेब अमृत के समान है। उन्हें दिन में हर बार भोजन से पहले दो ताजा-मीठे सेब खाने चाहिए या सेब की चाय पीनी चाहिए।

मस्तिष्क की कमजोरी दूर करने के लिए सेब एक अचूक इलाज है। ऐसे रोगी को प्रतिदिन एक सेब खाने को दें। इसके अतिरिक्त रोगी को दोपहर तथा रात को भोजन में कच्चे सेबों की सब्जी दें। शाम को एक गिलास सेब का रस दें तथा रात को सोने से पूर्व एक पका मीठा सेब खिलाएं। इससे एक महीने में ही रोगी की दशा में सुधार आने लगता है। जिन लोगों की आंखें कमजोर हैं उन्हें एक ताजा सेब की पुल्टिस कुछ दिनों तक आंखों पर बांधनी चाहिए। यदि भोजन के साथ प्रतिदिन ताजा मक्खन तथा मीठा सेब खाएं तो नेत्र ज्योति तो तेज होती ही है साथ ही दस्त व पेशाब खुलकर आता है तथा चेहरा सुर्ख हो जाता है।

बुखार में रोगी को प्यास, जलन, थकान तथा बेचैनी हो तो सेब की चाय या ताजा सेब का रस पिलाना चाहिए। इससे रोगी को तुरंत आराम मिलता है। गले में घाव, छाले हों या किसी भी चीज को निगलने में कष्ट होता हो तो अच्छे ताजे सेब का रस निकालें फिर चम्मच से धीरे-धीरे रस गले तक ले जाएं और कुछ समय के लिए गले में रोककर रखें। इससे आश्चर्यजनक लाभ होता है। पेट में गैस की शिकायत रहती हो तो एक मीठे सेब में लगभग 10 ग्राम लौंग चुभाकर रख दें। दस दिन बाद लौंग निकालकर तीन लौंग तथा एक मीठा सेब नियमित रूप से खाएं। इस दौरान चावल या उससे बनी चीजें रोगी को खाने को न दें। पेट के कीड़ों के निदान के लिए रोगी को प्रतिदिन दो मीठे सेब दें या प्रतिदिन एक गिलास ताजा सेब का रस दें। इससे कीड़े मर जाते हैं और मल के रास्ते निकल जाते हैं। कब्ज दूर करने के लिए प्रतिदिन सुबह उठकर खाली पेट दो सेब चबाचबाकर खाएं। इससे अग्निमांद्य दूर होता है और भूख भी बढ़ जाती है।

दिल कमजोर हो या दिल की धड़कन कम या ज्यादा हो तो चांदी का वर्क लगाकर सेब के मुरब्बे का सेवन करना चाहिए। इससे मोटापा भी दूर होता है। अनिद्रा के उपचार में भी सेब बहुत उपयोगी है। नींद न आती हो या एक-दो बजे नींद खुलने पर दुबारा नींद न आती हो तो रोगी को सोने से पहले एक मीठे सेब का मुरब्बा खिलाइये तथा ऊपर से गुनगुना दूध पीने को दें। इससे अच्छी नींद आएगी। सेब की जड़ की छाल, प्रशीतक तथा आंत्र-कृमिहर है। छाल का फांट बारी के पैत्रिक बुखारों में लाभकारी होता है।

बिच्छू का विष उतारने के लिए सेब के ताजा रस में आधा ग्राम कपूर मिलाकर आधे-आधे घंटे बाद पिलाना चाहिए। पके सेब के एक गिलास रस में मिसरी मिलाकर प्रतिदिन सुबह नियमित रूप से पीने से पुरानी से पुरानी खांसी भी ठीक हो जाती है। जिन्हें सिरदर्द चिड़चिड़ापन, बेहोशी, उन्माद या भूलने की शिकायत हो, उन्हें भोजन से पहले दो ताजा मीठे सेबों का सेवन करना चाहिए। ऐसे रोगी को साधारण चाय-कॉफी छोड़कर केवल सेब की चाय ही पीनी चाहिए।

पेज 9 का शेष

अहंकार की परत को ...

शक्ति छिपी हुई है जो इच्छा के रूप में उसे दिखाई देती है। सचमुच यदि मनुष्य दृढ़तापूर्वक अपनी उस अभ्यांतरिक इच्छा की पूर्ति के लिए सचेष्ट होता है तो उसे पूरा करके ही दम लेता है।

वास्तव में एक लघु बीज से ही विशालकाय वृक्ष का जन्म होता है। बीज अंकुरित होने और विशालकाय वृक्ष का रूप धारण करने के पहले उसके बीज को धरती के भीतर गड़े रहना पड़ता है तब कहीं जाकर वह बीज वृक्ष के रूप में फिर से जीवन ग्रहण करता है। अर्थात एक प्रकार से उसे अपना अस्तित्व समाप्त करने के लिए तैयार रहना पड़ता है। हमारे सामान्य जीवन में भी यह अद्भुत लीला चलती रहती है। जीवन में छोटी-सी-छोटी सफलताओं का भी अर्थ है। प्रत्येक महान उपलब्धि के पीछे वश में की गई जटिल कठिनाइयां, रौंदी हुई बाधाओं तथा दबाई गई आपदाओं का इतिहास छुपा रहता है।

जीवन में आपको कैसी भी विपत्तियों का सामना करना पड़े, उनसे विचलित नहीं होना चाहिए। खतरों से लड़ने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए। अधिक संभावना यही है कि आप ही की विजय होगी। सुख-समृद्धि और आत्मिक शांति का द्वार खोलने के लिए दो प्रकार की कुंजियों की आवश्यकता होती है। पहली कुंजी है, दृढ़ इच्छाशक्ति और दूसरी है, कठोर श्रम-साधना। दृढ़ इच्छाशक्ति के बिना सफलता की कामना नहीं की जा सकती और कठोर श्रम-साधना के अभाव में विजयश्री अर्जित नहीं की जा सकती। इस प्रकार असलियत की खोज की बलवती इच्छा उसे आत्मबोध के सोपान तक पहुंचा कर ही शांत होती है।

समस्त संसार में जड़-जंगम पदार्थों को अपने भीतर असलियत को पहचानना व आधार स्थिर करना ही आत्मबोध की क्रिया है, क्योंकि इस संसार में आत्मवत् सर्वभूतेषु अर्थात सभी के अंदर आत्मस्वरूप परमात्मा को पहचानने की प्रवृत्ति उन्नति की ओर अग्रसर करता है। किंतु इस विपक्षी संसार में सभी के मन में सांसारिक भोग को भोगने की अभिलाषा जागृत होती है। कई बार श्रम करके उस लक्ष्य पर पहुंचने के प्रयास से पहले ही मनुष्य भ्रमित हो जाता है, क्योंकि जो 'इंद्रिय द्वार झारोखा नाना' है इनके माध्यम से वह विषय और अज्ञानता रूपी वायु से (तत्व ज्ञान) दीपक विसर्जित होने लगता है। प्रकाश में परछाई भयावनी होती है किंतु अंधकार में प्रकाश की एक किरण मार्ग दर्शन कराती है। यदि वास्तव में बोध चाहिए ज्ञान के मार्ग चलते हुए कर्म धर्म को करते हुए सांसारिक विषयों का त्याग कर देना चाहिए।

जीवन में जबतक अहंकार की परत चढ़ी रहेगी तब तक अंदर बैठी वासनाएं, उस बोध के मार्ग पर जाने के पहले ही किसी प्रहरी के समान डेरा डालकर अपने जमावड़े में उलझा देती हैं। वहीं पर विचलित व्यक्ति उपयुक्त मार्ग को छोड़कर मोह रूपी नदी में कूद जाता है। मेरा, तेरा का भेद तथा वह स्वयं को ही ब्रह्म समझकर उलझे हुए व्यक्तियों को उलझा देता तथा स्वयं तैरकर उस दरिया से पार जाने में सक्षम है और न किसी के पहुंचने में सहयोग है। यह मोह रूपी आवरण से ढका हुआ जीव संसाररूपी सागर में चक्कर लगाकर गिरता है, क्योंकि जो हम देखते है वह केवल भौतिकता है।

हमारी इंद्रियां जब तक परवश में हैं तबतक सब कुछ नाशवान है, क्योंकि इन्हीं इंद्रियों की तृप्ति के लिए ही हम मोह के जाल में फंसे हुए हैं। यह मोह शीघ्र तो छूटता नहीं है, इसे छोड़ने में अपने को समर्पण करना होता है। तभी जीवन में परमात्मा के सानिध्य में पहुंचाने वाली भक्ति का नवीन अंकुरण स्फुटित होता है। अंकुरण के पूर्व जो भी बीज बोता है वह अपना सर्वस्य न्योछावर करके मोक्ष प्राप्त करता है। असलियत को जानकर परमात्मा द्वारा निर्मित इस प्रकृति एवं विश्व से समन्वय स्थापित करना मानव जीवन का उद्देश्य होना चाहिए। इसी में जीवन की सच्ची सुख-शांति एवं समृद्धि निहित है जो असलियत की खोज वाली भावना की बुनियाद पर निर्मित होती है।

पेज 12 का शेष

चाना छठ व्रत ...

चाना छठ व्रत को चंदन छठ व्रत भी कहा जाता है। यह व्रत भाद्रपद कृष्ण षष्ठी को मनाया जाता है। यह व्रत केवल कुंवारी कन्याओं को करना चाहिए। इस व्रत के पुण्य से पितरों का आशीर्वाद प्राप्त होता है जिससे सुयोग्य वर और सुख-शांति की उपलब्धि होती है।

बोली आज तो तुम्हारा श्राद्ध था। तुम्हें तो खूब भोजन मिला होगा।

बैल बोला- मैं तो दिन भर खेत में ही कार्य रहा था। आज तो मुझे कुछ भी नहीं मिला। कुतिया बोली जो आज श्राद्ध की खीर बनी थी उसमें चील ने सर्प डाल दिया था। उस खीर को कोई खाकर मर न जाये इसी कारण मैंने उस खीर में मुंह दे दिया था जिस कारण बहू ने मेरी पीठ पर ऐसा डण्डा मारा कि मेरी हड्डी टूट गयी। इससे बहुत दर्द हो रहा है और कुछ खाने को भी नहीं मिला।

साहूकार की बहू को पशु भाषा मालूम थी। उन दानों की ये सब बातें बहू सुन रही थी। उसने कुतिया और बैल की सब बातें

अपने पति से कहीं। तब लड़के ने ज्योतिषियों को बुला कर पूछा कि मेरे माता-पिता किस योनि में हैं? तब ज्योतिषि बोला- तुम्हारे यहां जो बैल है वह तुम्हारे पिता हैं और तुम्हारे यहां जो कुतिया है वही तुम्हारी माता है।

लड़का बोला- तब इनका उद्धार कैसे होगा? ज्योतिषी बोला- तुम अपनी कुंवारी कन्याओं को भाद्रपद लगते ही जो चाना छठ आती है, उसका व्रत रखवाओ तब तुम्हारे माता-पिता का उद्धार हो जायेगा। लड़के ने ऐसा ही किया, जिससे उसके माता-पिता पशु योनि से छूट कर दिव्य देह धारण कर स्वर्ग को चले गये। इस व्रत के प्रभाव से उसकी पुत्री के लिए भी सुयोग्य वर मिल गया। घर में सुख समृद्धि के सभी साधन प्राप्त हो गये।

चाना छठ का उजमन - जिस साल जिस लड़की का विवाह हो उस साल वह लड़की चाना छठ का उजमन करे। व्रत पूजा पहले की तरह करे। कहानी सुन कर सात जगह 4-4 पूरी और सोरा रखे। उन पर कुछ मीठा और दक्षिणा रख कर सासू जी को पांव छूकर दे। अपने साथ सात कुंवारी कन्याओं को व्रत कराये। रात्रि में अर्घ्य देकर सातों लड़कियों सहित भोजन करे। साथ में एक कुंवारे लड़के को भी भोजन कराये। यदि उन सात कन्याओं में कोई ब्राह्मण की लड़की हो तो उसे दक्षिणा भी दे।

पेज 13 का शेष

गायत्री महिमा व ...

सरस्वती, वेदमाता, पृथ्वी, अजा, कौशिकी, साङ्कृति और सार्वाजति– इन नामों का उच्चारण करके भगवती गायत्री का तर्पण करना चाहिये। तर्पण के अनन्तर 'जातवेद सं.' आदि ऋचा का पाठ करना आवश्यक है। विद्वान पुरुष शांति के लिये 'मानस्तो के.' इस मंत्र का भी पाठ करे। इसके बाद 'त्र्यम्बकं.' इस मंत्र का पाठ करे। शान्त्यर्थ 'तच्छयो.' इस मंत्र का भी जप किया जाता है। इसके बाद 'देवा गातु.' इस मंत्र को पढ़कर अपने दोनों हाथों से सम्पूर्ण शरीर का स्पर्श करें। फिर 'स्पोना पृथिवी.' इस मंत्र को पढ़कर पृथ्वी देवी को प्रणाम करने का विधान है। श्रेष्ठ द्विज को चाहिये कि वे प्रणाम करते समय नियमानुसार अपने नाम और गौत्र का उच्चारण करें।

इस प्रकार का विधान प्रात:काल की संध्या का कहा गया है। संध्या–कर्म समाप्त करके स्वयं अग्निहोत्र भी करें। होम करने के पश्चात सावधान होकर पाँच देवताओं की पूजा करनी चाहिए, ये पांच देवता हैं– भगवती शिवा, शंकर, गणेश, सूर्य और विष्णु। पुरुष सूक्त, व्याहृति, मूलमंत्र अथवा 'श्रीश्च ते.' इस मंत्र से पूजा की जा सकती है। मण्डल के मध्य भाग में भवानी की पूजा होनी चाहिये। ईशान कोण में माधव की, अग्निकोण में गिरिजापति शंकर जी की, नैर्ऋत्य–कोण में गणेश की और वायव्य कोण में सूर्य की क्रमश: स्थापना करके पूजा करे। सोलह प्रकार के उपचारों से सोलह ऋचाओं का पाठ करके मनुष्य इन देवताओं को वस्तुएँ अर्पण करे। सर्वप्रथम देवी की पूजा करके क्रमश: अन्य देवताओं का पूजन करना चाहिये। कारण, देवी की पूजा से बढ़कर पुण्य कहीं भी नहीं दिखायी पड़ता। इसीलिये संध्याओं में संध्या की उपासना की जाती है। अक्षत से भगवान विष्णु की, तुलसी से गणेश की, दूर्वा से दुर्गा की और केतकी के पुष्प से शंकर की पूजा नहीं करनी चाहिये। मालती, चमेली, कटुज, पनस, किशुक, बकुल, कुन्द, लोध, करवीर, शिंशपा, अपराजिता, अगस्त्य, मन्दार, सिन्दुवार, पलास, दूर्वा, बिल्वपत्र, कुशकी मंजरी, शल्लकी, माधवी, मन्दार का पुष्प, केतकी, कचनार, कदम्ब, नागकेसर, चम्पा, जूही और तगर आदि पुष्प भगवती को अत्यन्त प्रिय हैं। गुग्गुल से भवानी के लिये धूप और तिल के तेल से दीपक प्रज्वलित करना चाहिये। इस प्रकार देवी की पूजा करके मूल मंत्र का जप करें। बुधजन यों पूजा समाप्त करने के बाद ही वेद के अध्ययन में तत्पर हों। इसके बाद अपनी वृत्ति के अनुसार अपवर्ग का साधन करने के लिये तप में प्रवृत्त होना चाहिये। विद्वान् पुरुष दिन के तीसरे भाग में नियमपूर्वक इस तप का अवकाश प्राप्त करता है।

श्रीनारद जी ने कहा– मानद! अब मैं श्रीदेवी की विशेष पूजा का विधान सुनना चाहता हूँ, जिसके करने से मनुष्य कृतकृत्य हो जाता है।

भगवान नारायण कहते हैं– देवर्षे! भगवती जगदम्बा की पूजा का क्रम कहता हूँ, सुनो! यह प्रसंग भुक्ति–मुक्ति प्रदान करने वाला तथा स्वयं अखिल आपत्तियों का निवारक है। सर्वप्रथम आचमन करके मौन होकर संकल्प करे। भूतशुद्धि आदि करना आवश्यक है। मातृकान्यास करके षडङ्गन्यास करना चाहिये। बुद्धिमान पुरुष शंख की स्थापना करके अर्घ्य आदि सामग्री एकत्र करे। पूजनोपयोगी उपस्थित द्रव्यों का अस्त्रमय जल से प्रोक्षण करे। फिर गुरु से आज्ञा लेकर पूजा आरम्भ करे। प्रथम पीठ की पूजा सम्पन्न करके देवी का ध्यान करने का नियम है। भगवती के प्रति सदा भक्ति और प्रेमपूर्वक आसन आदि उपचार अर्पण करने के पश्चात पंचामृत एवं रस आदि से उन्हें स्नान कराये। जो पुरुष पौण्ड्र–संज्ञक गन्ने के रस से भरे हुए सैकड़ों कलशों द्वारा भगवती महेश्वरी को स्नान कराता है, उसका फिर जगत में जन्म नहीं होता। इसी प्रकार जो पुरुष वेद का पारायण करके आम अथवा ईख के रस से भगवती जगदम्बा को स्नान कराते हैं, उनके घर से लक्ष्मी और सरस्वती कभी दूर नहीं होतीं। जो श्रेष्ठ मानव वेद का पारायण करते हुए दाख के रस से भगवती जगदम्बा का अभिषेक करते हैं, वे अपने कुटुम्बों सहित रस में जितने रेणु हैं, उतने वर्षों तक देवी लोक में प्रतिष्ठित होते हैं। कर्पूर, अगुरु, केसर, कस्तूरी और कमल के जल से वेद पाठ करते हुए देवी को स्नान कराने वाले पुरुष के सैकड़ों जन्मों के उपार्जित पाप भस्मीभूत हो जाते हैं। जो पुरुष दुग्ध पूर्ण कलशों से वेद के मंत्र पढ़कर देवी को स्नान कराता है, वह कल्पर्यन्त क्षीरसागर में निरन्तर स्थान पाता है। दही से स्नान कराने वाला पुरुष दधि–कुण्डका अधिपति होता है। मधु, घृत तथा शर्करा से स्नान कराने वाले पुरुषों का तत्तद् वस्तुओं के स्वामी होने की सुविधा प्राप्त होती है। भक्तिपूर्वक हजार कलशों से देवी को स्नान कराने वाला पुण्यात्मा पुरुष इस लोक में सुख भोगकर परलोक में भी सुखी होता है। भगवती को दो रेशमी वस्त्र प्रदान करके पुरुष वायु लोक में जाता है। रत्न–जटित भूषण देवी को अर्पण करने वाला मानव दूसरे जन्म में राजा होता है। केसर, कस्तूरी की बिन्दी, ललाट पर सिंदूर एवं देवी के चरणों में महावर लगाने वाला पुरुष देवताओं का स्वामित्व प्राप्त करके इन्द्रासन पर विराजमान होता है।

साधु पुरुष पूजा की विधि में अनेक प्रकार के पुष्प बतलाते हैं। उन पुष्पों को अर्पण करके पुरुष स्वयं कैलासधाम प्राप्त कर लेता है। भगवती आद्याशक्ति को पवित्र बिल्वपत्र अर्पण करने चाहिये। बिल्वपत्र समर्पण करने वाले पुरुष को कभी किसी भी परिस्थिति में दु:ख नहीं भोगना पड़ेगा। तीन पत्ते वाले बिल्वपत्र पर रक्त चंदन से यत्न पूर्वक स्पष्ट एवं सुंदर अक्षरों में मायाबीज मंत्र (ह्रीं) तीन बार लिखे। माया बीज जिसके आदि में हो, उस नाम के साथ चतुर्थी विभक्ति का उच्चारण करके अन्त में 'नम:' शब्द जोड़कर (ॐ ह्रीं भुवनेश्वर्यै नम:) इस मंत्र से महादेवी भगवती जगदम्बा के चरण कमल में परम भक्तिपूर्वक वह कोमल पत्र समर्पण करे। जो भक्ति के साथ इस प्रकार भगवती की उपासना करता है, वह ब्रह्माण्ड का स्वामी होता है। अष्टगंध से चर्चित एक करोड़ नूतन कुन्द पुष्पों द्वारा देवी की पूजा करने वाला पुरुष निश्चय ही प्रजापति के पद का अधिकारी होता है। ऐसे ही अष्टगन्ध से चर्चित एक कोटि–कोटि मल्लिका और मालती से जो भगवती की पूजा करता है, वह चतुर्मुख ब्रह्मा होता है। मुने! इसी प्रकार दस करोड़ पुष्पों से पूजा करने वाले मानव को विष्णु पद की, जो देवताअें के लिये भी दुर्लभ है, प्राप्ति होती है। पूर्व समय में भगवान विष्णु भी अपना पद प्राप्त करने के लिये यह व्रत कर चुके हैं। इस प्रकार एक अरब पुष्पों के चढ़ाने से सूत्रात्मा (सूक्ष्म–ब्रह्म) की प्राप्ति होती है। यत्नपूर्वक भक्ति के साथ सम्यक् प्रकार से किये हुए इस व्रत के प्रभाव से ही भगवान विष्णु हिरण्यगर्भ हुए हैं। जपाकुसुम (अड़हुल), बन्धूक (दुपहरिया) और दाड़िम (अनार) का पुष्प भी भगवती को अर्पण किया जाता है। ऐसी विधि कही गयी है। ऐसे अन्य भी बहुत से पुष्प भगवती श्रीदेवी को विधिपूर्वक अर्पण करने चाहिये। इसके अनन्त पुण्यफल को ईश्वर भी नहीं जानते। जिस–जिस ऋतु में जो पुष्प उपलब्ध हो सकते हों, उन हजारों पुष्पों से प्रतिवर्ष सावधान होकर भगवती महादेवी की पूजा करे। जो भक्तिपूर्वक इस प्रकार उपासना करता है, वह महापातकी एवं उपपातकी ही क्यों न हो, उसके सभी पाप भस्म हो जाते हैं। मुने! ऐसा श्रेष्ठ साधक अन्त में भगवती के चरण कमल को, जो प्रधान देवताओं के लिये भी दुर्लभ हैं, प्राप्त कर लेता हैं– इसमें कोई संशय नहीं है।

कृष्ण, अगुरु, कर्पूर, चंदन, सिल्हक (लोबान), घृत और गुग्गल से युक्त धूप महादेवी को दिया जाय, जिससे मंदिर सुवासित हो उठे। इससे प्रसन्न होकर भगवती देवेश्वरी साधक को तीनों लोक सौंप देती हैं। कर्पूर–खण्डों से युक्त दीपक देवी को निरन्तर अर्पण करे। इससे साधक को सूर्य लोक की प्राप्ति होती है। चित्त को सावधान करके सैकड़ों एवं हजारों दीपक देने का भी विधान है। इसके बाद देवी के सम्मुख नैवेद्य का पर्वत जैसा ढेर लगा दे। उसमें लेह्य, चोष्य, पेय और षड्रस सभी वस्तुएँ होनी चाहिये। अनेक प्रकार के स्वादिष्ट रस से भर हुए दिव्य फल हों। ये सभी पदार्थ सुवर्ण के थाल में रखकर देवी को निरन्तर अर्पण करे। श्रीमहादेवी के तृप्त हो जाने पर तीनों लोक तृप्त हो जाते हैं, क्योंकि अखिल जगत् उन्हीं का तो रूप है। जैसे रस्सी में सर्प का भान होता है, वैसे ही जगत केवल भास मात्र है। इसके बाद प्रचुर मात्रा में पवित्र गंगाजल देवी को निवेदन करे। कर्पूर और नारियल–जल से युक्त कलश का शीतल जल देवी को अर्पण करे। तत्पश्चात मुख को सुगन्ध प्रदान करने वाला ताम्बूल भगवती को अर्पण करना चाहिये। उस ताम्बूल में कर्पूर के छोटे–छोटे टुकड़े, इलायची और लवंग हों। इसे भक्तिपूर्वक अर्पण करने से भगवती प्रसन्न होती है। फिर मृदंग, वीणा, मंजीर, डमरू और दुन्दुभि आदि वाद्यों की ध्वनि से, अत्यन्त मनोहर संगीत, वेदपाठ, स्तोत्र और पुराणों के पाठ से भवती जगदम्बा को संतुष्ट करे। तदनन्तर सावधान होकर देवी को छत्र और चामर अर्पण करें। श्रीदेवी का नित्य प्रति राजोपचार से पूजन करने का नियम है। जगत को धारण करने वाली भगवती जगदम्बा को अनेक प्रकार से दक्षिणा दे।

फिर नमस्कार करके बार–बार प्रार्थना करे। एक बार के स्मरण मात्र से जब देवी प्रसन्न हो जाती हैं, तब इस प्रकार के उपचार करने पर प्रसन्न हो जायँ तो इसमें संदेह ही क्या है। पुत्र पर कृपा करना माता का स्वभाव ही है, फिर जिसने माता के प्रति भक्ति की है, श्रद्धा की है, उसके विषय में तो कहना ही क्या है।

इस विषय में एक बहुत पुराना इतिहास तुम्हें बतलाता हूँ। मन में भक्ति उत्पन्न करने वाला यह प्रसंग राजा बृहद्रथ से संबंध रखता है। हिमालय देश में कहीं चक्रवाक पक्षी था। वह अनेक देशों में घूमता–घामता काशी में पहुँच गया। भाग्यवश वह पक्षी अन्नपूर्णा के दिव्य स्थान पर जा पहुँचा। अनाथ की भाँति अन्नपूर्णा के लोभ से ही वह वहाँ गया था। अनायास ही आकाश में घूमते हुए उसके द्वारा मंदिर की प्रदक्षिणा हो गयी। किसी अन्य देश में न जाकर अब वह मुक्तिप्रदायिनी काशीपुरी में ही रहने लगा। बहुत दिनों के बाद वह मृत्यु को प्राप्त हो स्वर्ग में गया। वहाँ दिव्यरूपधारी युवक बनकर उसने सम्पूर्ण भोग भोगे। स्वर्ग में दो कल्प तक रहने के पश्चात पुन: भूमण्डल पर उसका जन्म हुआ। क्षत्रियों के उत्तम वंश में उसकी उत्पत्ति हुई और भूमण्डल पर बृहद्रथ नाम से उसकी प्रसिद्धि हुई। वह महान यज्ञशाली, परम धार्मिक, सत्यवादी, जितेन्द्रिय, त्रिकालज्ञ, शत्रुविजयी, संयमी और सार्वभौम राजा हुआ। उसे पूर्व जन्म की सभी बातें स्मरण थीं, जो जगत में सबके लिये दुर्लभ है। परम्परा से उसके इस गुण को सुनकर मुनिगण वहाँ आये। राजा ने उनका आतिथ्य–सत्कार किया। वे सब आसन पर विराजे। तत्पश्चात मुनियों ने पूछा– 'राजन्! किस पुण्य के प्रभाव से तुम्हें पूर्वजन्म की सारी बातें स्मरण हो जाया करती हैं? तुम्हारे द्वारा कौन ऐसा पुण्य कार्य बन चुका है, जिससे तुम त्रिकालज्ञानी हो गये हो? तुम्हारे इस ज्ञान के रहस्य को जानने के लिये ही हम यहाँ आये हैं। राजन्! तुम कपट रहित हो, यथार्थ बातें हमें बताओ।'

भगवान नारायण कहते हैं– ब्रह्मन्! मुनियों की उपर्युक्त बातें सुनकर उन परम धार्मिक राजा बृहद्रथ ने उनसे सारी बातें कह सुनायीं। कहा– 'मुनिवरों! आप सब लोग मेरे त्रिकालज्ञ एवं ज्ञानी होने का कारण सुनें। इसके पहले मैं चक्रवाक था। नीच योनि में मेरी उत्पत्ति हुई थी। मेरे द्वारा अज्ञानवश अकस्मात देवी के मंदिर की प्रदक्षिणा हो गयी। उसी पुण्य के प्रभाव से मैं स्वर्ग में गया। दो कल्पों तक वहाँ सुख भोगता रहा। उत्तम व्रत का पालन करने वाले मुनियो! उसी के प्रभाव से इस भूमण्डल पर जन्म लेने पर भी मुझे तीनों काल की बातें जानने की शक्ति प्राप्त है। भगवती जगदम्बा के चरणों का स्मरण करने से कितना फल होता है, इसे कौन जान सकता है? ओह! आज इतनी महिमा का स्मरण करते ही मेरी आँखों से निरन्तर आनन्द के आँसू झर रहे हैं। उन कृतघ्न और पापियों के जन्म को धिक्कार है, जो जगज्जननी भगवती को अपना उपास्य देवता समझते हुए भी उनकी आराधना नहीं करते। इस संशयशून्य विषय में मैं अधिक क्या कहूँ? बस, भगवती के चरण कमलों की ही निरन्तर उपासना करनी चाहिये। इससे बढ़कर धरातल पर दूसरा कोई श्रेष्ठ कार्य नहीं है। निर्गुण अथवा सगुण किसी भी देवी की भक्तिपूर्वक उपासना करनी चाहिये।'

भगवान नारायण कहते हैं– नारद! राजर्षि बृहद्रथ बड़े ही धार्मिक नरेश थे। उनके पूर्वोक्त वचन सुनकर मुनिगणों का हृदय प्रसन्नता से भर गया। वे सभी अपने–अपने स्थानों पर चले गये। ये भगवती जगदम्बा किस प्रकार के विलक्षण प्रभावों से सम्पन्न हैं। इनकी पूजा के कितने महान फल हैं, इसके विषय में कौन पूछे और उत्तर दे? अर्थात् इसके प्रष्टा और वक्ता दोनों ही दुर्लभ हैं।

हमारे प्रकाशन

श्री शनिचरणानुरागी श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर दाती जी महाराज राजस्थानी ने कई महत्वपूर्ण विषयों पर अनेकानेक पुस्तकों की रचना की है। उनके अनेक ग्रंथ तो अब भी अप्रकाशित पड़े हुए हैं। प्रभु की कृपा से हम उनकी निम्नलिखित पुस्तकों को प्रकाशित करने में सफल हुए हैं, जिनकी काफी दिनों से प्रतीक्षा की जा रही थी। आशा है, इन पुस्तकों से पाठकगण विशेष लाभ उठाने में सफल होंगे।

ज्योतिष व वास्तु

पुस्तक का नाम	मूल्य (रु.)
सरल ज्योतिष प्रवेशिका	200
सरल गोचर प्रवेशिका	200
सरल मुहूर्त प्रवेशिका	100
सरल वास्तु प्रवेशिका	150
सरल हस्तरेखा विज्ञान प्रवेशिका	150
ताजिक ज्योतिष	150
सामान्य ज्योतिष एवं खगोल	50
शनि समग्र दर्शन (प्रथम भाग)	200
शनि समग्र दर्शन (द्वितीय भाग)	200
शनि साधना के चमत्कारिक प्रयोग	100
द्वादश भावों में श्री शनिदेव	100
क्या है शनि की साढेसाती और ढैय्या	100
शनि उपासना क्यों और कैसे ?	200
शनि चरित्र गाथा व शनितीर्थ महात्म्य	100
शनि शांति के अमोघ देव अनुष्ठान	100
शनिवार व्रत विधि व कथा	25
काल सर्प योग	100

स्वास्थ्य व चिकित्सा

पुस्तक का नाम	मूल्य (रु.)
भोग रोग योग	200
चमत्कार को नमस्कार	100
अद्भुत देसी नुसखे भाग – 1	100
अद्भुत देसी नुसखे भाग – 2	200
अद्भुत देसी नुसखे भाग – 3	200
दाती गुरुमंत्र के उपाय खंड – 1	125
दाती गुरुमंत्र के उपाय खंड – 2	200
दाती गुरुमंत्र के उपाय खंड – 3	200
दाती गुरुमंत्र के उपाय खंड – 4	200
दाती गुरुमंत्र के उपाय खंड – 5	200
ग्रह–नक्षत्र शांति द्वारा रोगोपचार	80
मंत्रों द्वारा रोगोपचार	30
आसनों द्वारा रोगोपचार	30
प्राणायाम द्वारा रोगोपचार	25
रोगोपचार में उपयोगी हस्त मुद्राएं	30
रोगोपचार में उपयोगी रत्न	25
सूर्य रश्मियों के रंगों से रोगोपचार	20
तन–मन के रोगों से मुक्ति की युक्ति	25
आसन:आरोग्यता का अनुपम साधन	225
प्राणायाम	150

अध्यात्म

खुला आमंत्रण परमानन्द के लिए	100
मानुष तन दुर्लभ अति	30
हो कौन ? जाओगे कहां ? जानोगे कैसे ?	100
जीवन शांत मन के साथ	35
तनाव मुक्त जीवन	35
गीता : मोह से मोक्ष तक की गाथा	50
लाली मेरे लाल की	125
समाधान	150
एक शाश्वत खोज	125
मर्म की बातें (I,II,III)	75
कुडलिनी जागरण	200
सफलता के सनातन सूत्र–प्रथम पुष्प	125
कार्य सफलता में बाधक तनाव	125
Living with peace of life	35
Eternal Bliss	150
Shedding of stress	50
Effectuation of Shani Adoration	200
Tiny Tips	125

संपर्क करें - श्री सिद्ध शक्ति पीठ शनिधाम ट्रस्ट, श्री शनि तीर्थ क्षेत्र असोला, फतेहपुर बेरी, महरोली, नई दिल्ली-74 फोन - 26654400, 26653600, फैक्स : 26653500

परम आनंद का अविनाशी अनुभव पाकर मृत्यु-भय से पूरी तर मुक्त हो जाओ- दाती श्री

मित्रो, इस संसार में जो भी आया है, उसका जाना निश्चित है। जो फूल खिलता है, वह मुरझाता भी है। जो प्राणी जन्म लेता है, वह मरता भी है। इसे कोई टाल नहीं सकता है। फिर भी पता नहीं क्यों लोग मौत का नाम सुनते ही घबराने लगते हैं। घबराने से यदि मौत टल जाती तो मैं भी आपको सलाह देता कि मौत से खूब घबराओ। किंतु कोई मौत से घबराये या न घबराये, इससे मौत पर कोई अंतर नहीं पड़ता है। जब उसे आना है, आयेगी ही। उसे कोई टाल नहीं सकता।

मौत यह नहीं देखती कि कौन धनी है या गरीब, कौन विद्वान है और कौन मूर्ख, कौन बलवान है और कौन अति दुर्बल। ज्योंही कोई प्राणी जन्म लेता है त्योंही उसके मरने की तिथि निश्चित हो जाती है। किंतु वह कब होगी, किसी भी विधि से उसे ठीक-ठीक बतलाया नहीं जा सकता। इसलिए मौत से घबराने से कोई लाभ नहीं।

हां, यदि मौत को याद रखते हुए हम वर्तमान जीवन का सही अर्थों में सदुपयोग करें तो उससे लाभ अवश्य उठाया जा सकता है। जब हमारा शरीर रुग्ण होता है तो उसके इलाज के लिए हम नाना प्रकार के तरीके अपनाते हैं। अनेक डॉक्टरों, वैद्यों व हकीमों से सलाह लेकर तरह-तरह की औषधियों का उपयोग करते हैं। किंतु किसी भी हकीम के पास मौत की कोई दवा नहीं होती। वे बड़े से बड़े रोगों का इलाज अवश्य कर सकते हैं। किंतु मौत को जब आना है तो आना है। उसे किसी भी उपचार से टाला नहीं जा सकता।

मैं यह मानता हूं कि कोई भी मनुष्य मरना नहीं चाहता। चाहे उसकी जिन्दगी अभावों में ही गुजर रही हो, तरह-तरह की व्याधियों व प्रतिकूलताओं से उसकी जीवनचर्या बड़ी कठिनाइयों के बीच से बड़ी धीरे-धीरे सरक रही हो, फिर भी वह मरना नहीं चाहता। जो भिखारी एक-एक टुकड़े मांगकर अपने भोजन का जुगाड़ करता है, जिसके सिर छिपाने के लिए कोई घर नहीं, वह भी मरना नहीं चाहता।

लेकिन किसी के चाहने या न चाहने से मौत टल नहीं पाती। मनुष्य ही नहीं सभी पशु-पक्षी व कीट-पतंग भी जीवित रहना चाहते हैं। जीवित रहने की इच्छा की वजह से ही इस सृष्टि में प्राणियो के अंदर चहल-पहल है। सभी अपनी जान बचाने के लिए तत्पर रहते हैं। अपनी खुराक पाने के लिए और दूसरे प्राणियों की खुराक बन जाने से अपने शरीर को बचाने के लिए सभी क्रियाशील रहते हैं। इसी प्रकार हर प्राणी आजीवन अपने आहार-विहार व सुरक्षा आदि की चेष्टा में संलग्न रहते हैं।

यदि प्राणियों के अंदर जीने की इच्छा ही न हो तो कोई प्राणी हिलना-डुलना भी पसंद न करे। किंतु अपने आहार व बचाव के लिए प्राणियों को भाग-दौड़ करनी ही पड़ती है। इस प्रकार साफ जाहिर है कि प्राणियों के अंदर जीने के लिए जो भी सक्रियता दिखती है, उसके पीछे मर जाने, मिट जाने का भय भी रहता है। इसलिए मौत को अशुभ क्यों माना जाये? क्योंकि यदि मौत का भय न हो, मर जाने या मिट जाने की आशंका न हो तो कोई भी प्राणी अपनी सुरक्षा व उदर पूर्ति के लिए सचेष्ट ही न हो। सारी दुनिया में मुरदानिगी छा जाये, लोग जीवित रहते हुए भी मुरदे की तरह बिना हिले-डुले पड़े रहें।

मित्रो, सच कहिए तो जो लोग मौत के भय से ऊपर उठ गये होते हैं, उन्हीं को आत्मा की अजरता-अमरता का वास्तविक बोध होता है। अपनी चेतना को अंदर मोड़ने से ही कुछ हासिल होगा। हाथ जोड़ने से कुछ नहीं होगा, भीतर बंटे हुए प्राणों को अपनी चेतना से जोड़ने पर ही कुछ उपलब्ध होगा।

आप अपने भीतर अवस्थित अपनी अस्मिता से जुड़ जाएं। इसी जुड़ाव को हमारे प्राचीन मनीषियों ने योग कहा है। योग का अर्थ जोड़ ही होता है। किंतु वह जोड़ गणित के जोड़ से अलग होता है, उस जोड़ में एक और एक जुड़कर दो नहीं होते बल्कि एक हो जाते हैं। जैसे ही आप अपनी आत्मा से जुड़ते हैं, आपका संबंध परमात्मा से हो जाता है। आप खुद ही परमात्मा हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में मौत से भयभीत होने की प्रवृत्ति भी समाप्त हो जाती है।

परमात्मा तो अजरता-अमरता का पर्याय है। वह शाश्वत व अविनाशी है। मौत की वहां पहुंच ही नहीं है। जब कोई बूंद महासागर में विलीन हो जाती है तो तब विलीन होने के क्षण से ही वह महासागर बन जाती है। उस बूंद को मिटने का भय नहीं रहता। वह तो बूंद होने के अहंकार के दायरे से पूरी तरह बाहर निकल महासागर बन जाती है। ठीक उसी प्रकार जीवात्मा कभी परमात्मा से जुड़कर तत्क्षण परमात्मा बन जाती है। मरने का भय तो जीवात्मा को होता है जो क्षुद्र अहंकार के बंधन में जकड़ा रहता है। ज्योंहि जीवात्मा के क्षुद्र अहंकार का नाश होता है त्योंही वह परमात्मा के सत्य स्वरूप से एकाकार हो जाता है। वह एक मरणशील जीवात्मा नहीं रह जाता बल्कि अजर-अमर व अविनाशी परमात्मा बन जाता है। अत: आप भी यदि मृत्यु के भय से पूरी तरह मुक्त हो परम आनंद का अविनाशी अनुभव पाना चाहते हैं तो समय के जीवंत मार्गदर्शक गुरु के सान्निध्य में पहंच उस युक्ति को जानने का प्रयत्न करें जिससे आपका वास्तव में उस अविनाशी परमात्मा से योग हो सकता है।

यदि प्राणियों के अंदर जीने की इच्छा ही न हो तो कोई प्राणी हिलना-डुलना भी पसंद न करे। किंतु अपने आहार व बचाव के लिए प्राणियों को भाग-दौड़ करनी ही पड़ती है। इस प्रकार साफ जाहिर है कि प्राणियों के अंदर जीने के लिए जो भी सक्रियता दिखती है, उसके पीछे मर जाने, मिट जाने का भय भी रहता है।

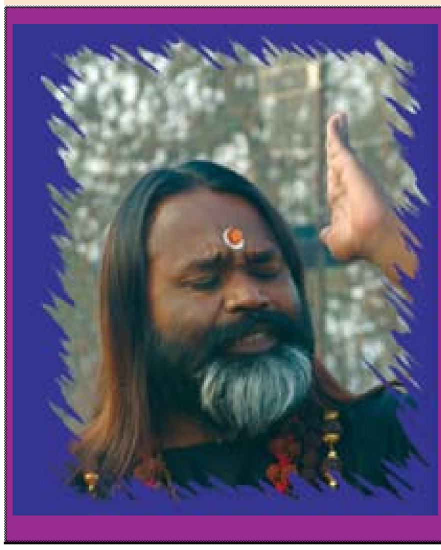

दाती के अनमोल वचन

गुरुमंत्र में जरुर देखिये INDIA TV

पर हर रोज रात्रि 11:00 बजे